2-विशेषण एवं विशेष्य

विशेषण:- जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करते हैं, विशेषण कहलाते हैं।
जैसे-

- रमेश अच्छा लड़का है।
- शीला बुद्धिमान है।
- वह लम्बा लड़का है।
- वह गाय काली है।

विशेषण के भेदः- गुण, संख्या और परिणाम के आधार पर 4 प्रकार के विशेषण होते हैं।

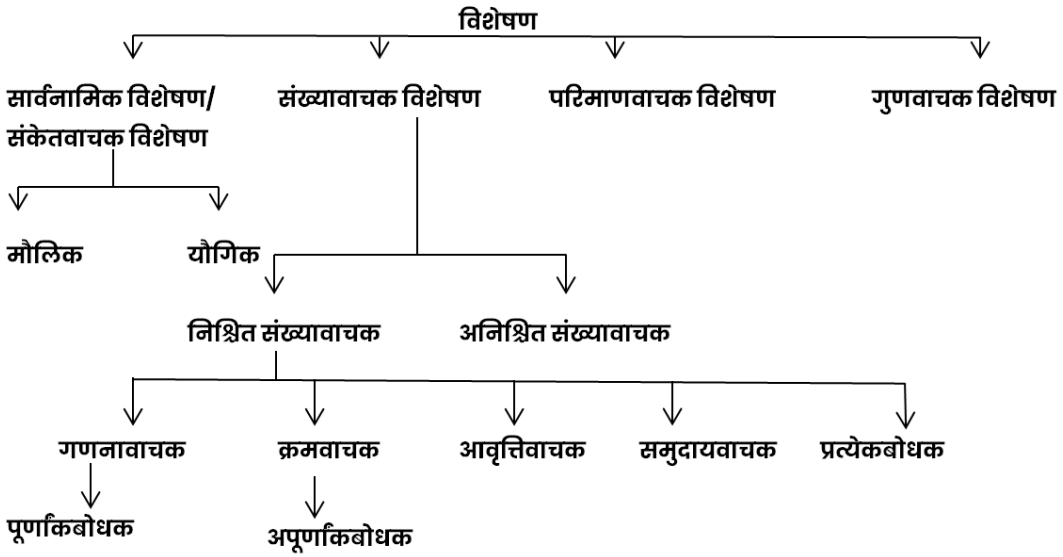

(1) सार्वनामिक विशेषणः- सर्वनाम शब्द जब विशेषण की तरह प्रयोग में आते हैं, तो सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं – पुरूषवाचक और निजवाचक।

❒ सर्वनाम (मैं, तू) के अतिरिक्त जब अन्य सर्वनाम किसी संज्ञा से पहले आते हैं, तो वे सार्वनामिक विशेषण का कार्य करते हैं।

उदाहरणः- वह मकान गिर जाएगा।,
यह पुस्तक अच्छी है।,
वे लोग मूर्ख हैं।
कौन व्यक्ति जा रहा है।,
ये घोड़े मजबूत हैं।

(1) पुरूषवाचक सर्वनामः- जो सर्वनाम किसी पुरूष (व्यक्ति) के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं, उन्हें पुरूषवाचक सर्वनाम के रूप में जानते हैं।

जैसे – मैं, आप, तू, वह, यह इत्यादि।

❒ किसी वक्ता या लेखक (जो संबोधित कर रहा हो) के सामने तीन तरह के पुरूष हो सकते हैं, वह स्वंय, सुनने वाला या तीसरा अन्य व्यक्ति जिसके बारे में बात की जा रही हो, इसी के आधार पर पुरूषवाचक सर्वनाम को तीन श्रेणियों में बांट सकते हैं।

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

पुरूषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरूष(लेखक या वक्ता स्वयं)	मध्यम पुरूष (श्रोता या पाठक)	अन्य पुरूष (लेखक/वक्ता या श्रोता/पाठक से भिन्न कोई अन्य)
मैं, मेरा, हम, हमारा, मुझको, हमको, मैनें, हमने, हमें, मुझे।	तू, तुम, तेरा, तुम्हारा, तुझे, तुम्हें, आपको, अपने।	वह, वे, उन्हं, उसके उसका, इसे , यह ये।

(2) निजवाचक सर्वनामः- निजवाचक सर्वनाम मूलतः पुरूषवाचक सर्वनाम का ही रूप है। निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग लेखक या वक्ता स्वयं के लिए करता है। जैसे – आप, अपने-आप, स्वयं, खुद, स्वतः, निज, हम।

विशेषः- जहाँ पर 'आप' कर्ता के रूप में प्रयुक्त होता है, वहाँ वह पुरूषवाचक होता है, परन्तु जब वह स्वयं कार्य नहीं करता किन्तु अपने विषय में कुछ संकेत करता है, तो वह (आप) निजवाचक सर्वनाम होता है।

उदाहरण –

- आप कहाँ गये थे? – पुरूषवाचक
- यह काम आपने ही किया है। - निजवाचक
- आप भला तो जग भला। - निजवाचक
- मैं स्वयं अस्पताल चला जाऊँगा। - निजवाचक
- आप चिंता मत करो – पुरूषवाचक
- आप लखनऊ चले जाना – पुरूषवाचक

व्युत्पत्ति के आधार पर सार्वनामिक विशेषण के दो प्रकार होते हैं।

(i) मौलिक (ii) यौगिक

(i). मौलिक सार्वनामिक विशेषणः- मूल रूप से हिन्दी के 11 सर्वनाम जब बिना किसी रूपान्तर के संज्ञा के पहले आकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं, तो ऐसे विशेषण को मौलिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसेः- **यह** घर।, **वह** व्यक्ति।, **कोई** आदमी।

(ii). यौगिक सार्वनामिक विशेषणः- जो सर्वनाम मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाकर बनते हैं और संज्ञा के पहले प्रयुक्त होकर विशेषण की तरह व्यवहार करते हैं, वे यौगिक सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

जैसेः- **ऐसा** व्यक्ति।, **कैसा** घर। **जैसा** देश।

2. गुणवाचक विशेषणः- किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण (विशेष स्थिति, दिशा, रंग, गुण-दोष, गंध, काल, स्थान, आकार, रूप स्वाद आदि) का बोध कराने वाले विशेषण को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। इसके प्रमुख उदाहरण निम्न हैं।

कालबोधक- नया, पुराना, भूत, वर्तमान, भविष्य, प्राचीन, अगला, पिछला, मौसमी, टिकाऊ, नवीन, क्षणिक, क्षणभंगुर।

स्थानबोधक – भारतीय, अमेरिकी, पंजाबी, असमी, क्षेत्रीय, देशीय, स्थानीय, उजाड़, चौरस, भीतरी, बाहरी, ऊपरी, सतही, पूरबी, पछुआ, चीनी, मद्रासी, बिहारी।

आकारबोधक – नुकीला, लंबा, चौड़ा, गोल, चौकोर, सुडौल, समान, असमान, खोखला, बेलनाकार, त्रिज्याकार, वर्गाकार, आयताकार।

रंगबोधक - लाल, पीला, हरा, नीला, बैंगनी, गुलाबी, काला, सफेद, सुनहरा, चमकीला, धुँधला, फीका।

दशाबोधक - अस्वस्थ, स्वस्थ, रोगी, भला, चंगा, तंदुरुस्त, बीमार, दुबला, पतला, मोटा, नाटा, भारी, पिघला, गाढ़ा, गीला, सूखा, घना, गरीब, अमीर, उद्यमी, पालतू, बाजारू।

गुणबोधक – उचित, अनुचित, भला, बुरा, अच्छा, खराब, सच्चा, झूठा, पुण्य, पापी, दानी, न्यायी, दुष्ट, दुराचारी, सदाचारी, सीधा, शांत, सरल, परिश्रमी, ईमानदार, दयालु, कृपण।

गंधबोधक -खुशबूदार, बदबूदार, सुगंधित, महकदार।

स्पर्शबोधक - कोमल, कठोर, मखमली, खुरदुरा, चिकना।

स्वादबोधक – मीठा, खट्टा, कसैला, क़ड़ुवा, मधुर, नमकीन, नित्का।

3. संख्यावाचक विशेषणः- जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, वे संख्यावाचक विशेषण होते हैं।

जैसेः- चार दिन, पाँच घर, दस दिशा,
कुछ व्यक्ति, सब कोई।

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

संख्यावाचक विशेषण के भेदः- संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं।

(i). निश्चित संख्यावाचक (ii). अनिश्चित संख्यावाचक

(i). निश्चित संख्यावाचकः- इस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध होता है।

उदाहरणः- एक कार, दो कमरे,
तीन लड़के, पाँच कुत्ते आदि।

(ii). अनिश्चित संख्यावाचकः- इस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या निश्चित रूप से ज्ञात नहीं होती है।

उदाहरणः- कुछ लोग, हर एक व्यक्ति,
सब लोग, कई व्यक्ति।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण के भेद एवं उदाहरणः-

(I) गणनावाचक विशेषणः- एक, दो, तीन, सवा, ढ़ाई, साढ़े तीन। इसके भी दो भेद हैं –

(क). **पूर्णांकिबोधक -** एक, दो, तीन, पाँच, आठ।

(ख). **अपूर्णांकिबोधक -** सवा, ढ़ाई, साढ़े तीन, पौने पाँच।

(II). क्रमवाचक विशेषणः- पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवां आदि।

(III). आवृत्तिवाचक विशेषणः- दूना, तिगुना, चौगुना, ढ़ाई गुना, दस गुना आदि।

(IV). समुदाय बोधक विशेषणः- दोनों, तीनों, चारों, आठों, एक दर्जन, एक जोड़ी आदि।

(V). प्रत्येक बोधक विशेषणः- हर-एक, दो-दो, सवा-सवा, प्रत्येक आदि।

4. परिमाणवाचक विशेषणः- परिमाण का अर्थ होता है 'माप'। अतः ऐसे विशेषण शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के परिमाप (माप, तौल) का बोध कराते हैं, परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

उदाहरणः- चार लीटर दूध, सवा सेर गेहूँ, कुछ घी, थोड़ा सा पानी आदि।

परिमाणवाचक विशेषण के भेद एवं उदाहरण-

निश्चित (निश्चित माप-तौल का बोध)	**अनिश्चित (अनिश्चित माप-तौल का बोध)**
एक मीटर कपड़ा	बहुत दूध
दो लीटर दूध	सारा धन
100 ग्राम जलेबी	ढेर सारा मक्खन
1 किलो हल्दी	कई किलो दही
1 तोला सोना	पचासों मन गेहूँ
2 लीटर तेल	तनिक सा अचार

विशेषण की अवस्थायें या तुलना (Degree of Comparison)- जिन विशेषणों के द्वारा दो या अधिक विशेष्यों के गुण-अवगुण की तुलना की जाती है, उन्हें 'तुलनाबोधक विशेषण' कहते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से एक ही प्रकार की विशेषता बताने वाले पदार्थों या व्यक्तियों में मात्रा का अन्तर होता है।

तुलना के विचार से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं-

(i) मूलावस्था (Positive Degree)
(ii) उत्तरावस्था (Comparative Degree)
(iii) उत्तमावस्था (Superlative Degree)

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
निकृष्ट	निकृष्टतर	निकृष्टतम
लघु	लघुतर	लघुतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

महत्	महत्तर	महत्तम
मोटा	अधिक मोटा	सबसे अधिक मोटा
अच्छा अधिक	अच्छा सबसे	अधिक अच्छा

क्रियाविशेषण (Adverb):-

जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं। अर्थात् जिन शब्दों से क्रिया या दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते है।

जैसे- यहाँ, तेज, अब, रात, धीरे-धीरे, प्रतिदिन, सुंदर, वहाँ, तक, जल्दी, अभी, बहुत इत्यादि क्रियाविशेषण शब्द प्रायः क्रियाओं की विशेषता बताने के लिए प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण- श्याम धीरे-धीरे टहलता है। श्याम वहाँ टहलता है। श्याम अभी टहलता है।

इन वाक्यों में 'धीरे-धीरे', 'वहाँ' और 'अभी' श्याम के 'टहलने' (क्रिया) की विशेषता बतलाते हैं। ये क्रियाविशेषण अविकारी विशेषण भी कहलाते हैं।

उदाहरण- इसके अतिरिक्त, क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता हैं। जैसे- **वह बहुत धीरे चलता है**। इस वाक्य में 'बहुत' क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह दूसरे क्रियाविशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

अन्य उदाहारण-

- बच्चे धीरे-धीरे चल रहे थे। (क्रियाविशेषण- धीरे-धीरे)
- वे लोग रात को पहुँचे। (क्रियाविशेषण- रात को)
- सुधा प्रतिदिन पढ़ती है। (क्रियाविशेषण- प्रतिदिन)
- रमेश प्रतिदिन पढ़ता है। (क्रियाविशेषण- प्रतिदिन)
- सुमन सुंदर लिखती है। (क्रियाविशेषण- सुंदर)
- मैं बहुत थक गया हूँ। (क्रियाविशेषण- बहुत)
- वह यहाँ से चला गया। (क्रियाविशेषण- यहाँ से)
- घोडा तेज दौड़ता है। (क्रियाविशेषण- तेज)
- वह यहाँ आता है। (क्रियाविशेषण- यहाँ)

<u>क्रिया विशेषण के प्रकार</u>

(1) प्रयोग के अनुसार- (i) साधारण (ii) संयोजक (iii) अनुबद्ध

(2) रूप के अनुसार- (i) मूल क्रियाविशेषण (ii) यौगिक क्रियाविशेषण (iii) स्थानीय क्रियाविशेषण

(3) अर्थ के अनुसार- अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषण के प्रमुख चार भेद हैं, कुछ पुस्तकों में 9 भेद भी बताये गए हैं। (उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा भी एक प्रश्न के उत्तर में चार भेद ही उत्तर में माना गया हैं।)

1. कालवाचक क्रियाविशेषण
2. रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
4 परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

प्रयोग के अनुसार क्रिया विशेषण के प्रकार-

(i) **साधारण क्रिया विशेषण**- जिन शब्दों का प्रयोग वाक्यों में स्वतंत्र रूप से किया जाता है, उन्हें साधारण क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे :- अरे! तुम **कब** आये ?, अरे! अब मैं **क्या** करूँ।, राम **जल्दी** जाओ ! अरे! वह चोर **कहाँ** गया ?

(ii) **संयोजक क्रियाविशेषण**- जिन शब्दों का संबंध किसी उपवाक्य के साथ होता है उन्हें संयोजक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे :-

- **जहां** तुम जाओगे, **वहीं** मैं जाऊँगा।
- **यहाँ** हम चल रहे हैं, **वहां** वो दौड़ रहे हैं।
- **जहाँ** तुम अभी खड़े हो, **वहां** घर हुआ करता था।
- **जब** अंकित ही नहीं **तो** मैं जी कर क्या करूंगी।
- **जहाँ** पर अब समुद्र है **वहाँ** पर कभी जंगल था।

(iii) **अनुबद्ध क्रियाविशेषण-** ऐसे शब्द जो निश्चय के लिए कहीं भी प्रयोग कर लिए जाते हैं वे शब्द अनुबद्ध क्रियाविशेषण कहलाते हैं। अर्थात् जिन क्रियाविशेषणों के प्रयोग अवधारण (निश्चय) के लिए किसी भी शब्दभेद के साथ होता हो, उन्हें 'अनुबद्ध क्रियाविशेषण' कहा जाता है। जैसे-

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

- यह काम **तो** गलत ही हुआ है।
- आपके आने **भर** की देर है।
- मैंने राम को देखा **तक** नहीं।

रूप के आधार पर क्रियाविशेषण अव्यय के भेद:- 1. मूल, 2. यौगिक, 3. स्थानीय

(i) मूल क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, 'मूल क्रियाविशेषण' कहलाते हैं। अर्थात् ऐसे शब्द जो दूसरे शब्दों में प्रत्यय लगे बिना बन जाते हैं, वे शब्द मूल क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

जैसे- पास, दूर, ऊपर, आज, सदा, अचानक, फिर, नहीं, ठीक, नहीं।

उदहारण-(i) **अचानक** से सांप आ गया। (ii) मैं **अभी** नही आया।

(ii) यौगिक क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय या पद जोड़ने पर बनते हैं, 'यौगिक क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे-मन से, जिससे, चुपके से, भूल से, देखते हुए, यहाँ तक, झट से, वहाँ पर। यौगिक क्रियाविशेषण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, धातु और अव्यय के मेल से बनते हैं।

उदाहरण-(i) तुम **रातभर** में आ जाना। (ii) वह **चुपके से** जा रहा था।

यौगिक क्रियाविशेषण की रचना-

- संज्ञाओं की द्विरुक्ति से- घर-घर, घड़ी-घड़ी, बीच-बीच, हाथों-हाथ।
- दो भिन्न संज्ञाओं के मेल से- सबेरे, सायं, आजन्म, क्रमशः, प्रेमपूर्वक, रातभर, मन से, दिन-रात, साँझ-सबेरे, घर-बाहर, देश-विदेश।
- सर्वनाम से यौगिक क्रियाविशेषण:- यहाँ, वहाँ, अब, कब, इतना, उतना, जहाँ, जिससे आदि।
- विशेषणों की द्विरुक्ति से- एक-एक, ठीक-ठीक, साफ-साफ।
- क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से- धीरे-धीरे, जहाँ-तहाँ, कब-कब, कहाँ-कहाँ।
- दो क्रियाविशेषणों के मेल से- जहाँ-तहाँ, जहाँ-कहीं, जब-तब, जब-कभी, कल-परसों, आस-पास।
- दो भिन्न या समान क्रियाविशेषणों के बीच 'न' लगाने से- कभी-न-कभी, कुछ-न-कुछ।
- अनुकरण वाचक शब्दों की द्विरुक्ति से- पटपट, तड़तड़, सटासट, धड़ाधड़।
- संज्ञा और विशेषण के योग से- एक साथ, एक बार, दो बार।
- अव्यय और दूसरे शब्दों के मेल से- प्रतिदिन, यथाक्रम, अनजाने, आजन्म।
- पूर्वकालिक कृदन्त और विशेषण के मेल से- विशेषकर, बहुतकर, मुख्यकर, एक-एककर।

(iii) स्थानीय क्रियाविशेषण- ऐसे अन्य शब्द-भेद जो बिना अपने रूप में बदलाव किये किसी विशेष स्थान पर आते हैं, वे स्थानीय क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

जैसे- वह अपना **सिर** पढ़ेगा। वह दौड़कर **चलते** हैं।

अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषण के प्रकार- अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषण के प्रमुख चार भेद हैं।

1. कालवाचक क्रियाविशेषण
2. रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

हालाँकि हिंदी के अन्य भाषा एवं व्याकरण विशेषज्ञों ने नौ भेद स्वीकार्य किये है जो कि निम्नवत है-

(1) कालवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Time)
(2) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Place)
(3) दिशावाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Direction)
(4) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Quantity)
(5) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Manner)
(6) निश्चयवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Definiteness)
(7) अनिश्चयवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Indefiniteness)
(8) निषेधवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Negation)
(9) कारणवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Cause)

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

(1) **कालवाचक क्रिया-विशेषण**- वो क्रियाविशेषण शब्द जो क्रिया के होने के समय के बारे में बोध कराते हैं, कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। कुछ कालवाचक क्रिया-विशेषण शब्द हैं- आजकल, अभी, तुरंत, रात-भर, दिन-भर, हर बार, कई बार, नित्य, कब, यदा, कदा, जब, तब, हमेशा, तभी, तत्काल, निरंतर, शीघ्र पूर्व, बाद, पीछे, घड़ी-घड़ी, अब, तत्पश्चात, तदनन्तर, कल, फिर, कभी, प्रतिदिन, दिनभर, आज, परसों, पहले, सदा, लगातार, अभी-अभी, प्रतिदिन, बार-बार, पहले, बाद में, निरन्तर, नित्य, दोपहर, सायं आदि।

उदहारण-

- मैंने **सुबह** खाना खाया था।
- मैं **शाम** को खेलता हूँ।
- मैं **सुबह** जल्दी उठता हूँ।
- मैं **दोपहर** में स्कूल से लौटता हूँ।
- वह **नित्य** टहलता है।
- वे **कब** गए।
- श्यामू **कल** मेरे घर आया था।
- वह **तुरन्त** चला गया।
- मैं वहाँ **कभी-कभी** जाता हूँ।
- **परसों** बरसात होगी।
- सीता **कल** जाएगी।
- वह **प्रतिदिन** पढ़ता है।
- **दिन भर** वर्षा होती है।
- कृष्ण **कल** जायेगा।

(2) **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण-** ऐसे अविकारी शब्द जो हमें क्रियाओं के होने के स्थान का बोध कराते हैं, वे शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे: जहाँ पर यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर, इधर, उधर, दाएँ, बाएँ, कहाँ, किधर, जहाँ, पास, दूर, अन्यत्र, इस ओर, उस ओर, ऊपर, नीचे, सामने, आगे, पीछे, आमने आते है वहाँ पर स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

उदाहरण-

- मैं **कहाँ** जाऊं ?
- तारा **कहाँ एवं किधर** गई ?
- सुनील **नीचे** बैठा है।
- **इधर-उधर** मत देखो।
- वह **आगे** चला गया।
- उधर **मत** जाओ।
- तुम **अन्दर** जाकर बैठो।
- मैं **बाहर** खेलता हूँ।
- हम **छत पर** सोते हैं।
- मैं **पेड़ पर** बैठा हूँ।
- शशि मुझसे **बहुत दूर** बैठी है।
- मुरारी **मैदान में** खेल रहा है।
- तुम अपने **दाहिने ओर** गिर जाओ।

(3) **दिशावाचक क्रिया-विशेषण-** जो शब्द क्रिया की दिशा से सम्बद्ध विशेषता बताएँ, उन्हें दिशावाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे- ओर, इधर, जिधर, किधर, सामने आदि।

उदाहरण-

- घर की **ओर** जाओ।
- मेरी **ओर** देखो।
- वह **उधर** मुड़ गया।

(4) **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण-** ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जिनसे हमें क्रिया के परिमाण, संख्या या मात्रा का पता चलता है, वे शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। अर्थात् जो शब्द क्रिया के परिमाण (मात्रा) से सम्बद्ध विशेषता प्रकट करें, उन्हें 'परिमाणवाचक क्रियाविशेषण' कहते है।

जैसे- काफी, ठीक-ठाक, बहुत, कम, अत्यंत, अतिशय, बहुधा, थोडा-थोडा, अधिक, अल्प, कुछ, पर्याप्त, प्रभूत, न्यून, बूंद-बूंद, स्वल्प, केवल, प्राय:, अनुमानत:, सर्वथा, उतना, जितना, खूब, तेज, अति, जरा, कितना, बड़ा, भारी, लगभग, बस, इतना, थोड़ा, पर्याप्त, जरा, खूब, अत्यन्त, तनिक, बिलकुल, स्वल्प, केवल, सर्वथा, अल्प आदि।

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

उदाहरण-

- **कम** खाओ।
- वह **कम** बोलता है।
- बहुत **अधिक** खाओगे, तो बीमार पड़ जाओगे।
- **उतना** बोलो **जितना** जरूरी हो।
- रमेश **खूब** पढ़ता है।
- **तेज** गाड़ी चल रही है।
- सविता **बहुत** बोलती है।
- मैं **बहुत** घबरा रहा हूँ।
- वह **अतिशय** व्यथित होने पर भी मौन है।

परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण के प्रकार-

(i) **अधिकताबोधक**- बहुत, अति, बड़ा, बिलकुल, सर्वथा, खूब, निपट, अत्यन्त, अतिशय।
(ii) **न्यूनताबोधक**- कुछ, लगभग, थोड़ा, टुक, प्रायः, जरा, किंचित्।
(iii) **पर्याप्तिवाचक**- केवल, बस, काफी, यथेष्ट, चाहे, बराबर, ठीक, अस्तु।
(iv) **तुलनावाचक**- अधिक, कम, इतना, उतना, जितना, कितना, बढ़कर।
(v) **श्रेणीवाचक**- थोड़ा-थोड़ा, क्रम-क्रम से, बारी-बारी से, तिल-तिल, एक-एककर, यथाक्रम।

(5) **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण-** जो शब्द क्रिया की रीति या ढंग बताते है उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते है। अर्थात् ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जो किसी क्रिया के होने की विधि या तरीके का बोध कराते हैं, वह शब्द रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। कुछ रीतिवाचक क्रिया-विशेषण शब्द- धीरे, जल्दी, ऐसे, वैसे, कैसे, ध्यानपूर्वक, सुखपूर्वक, शांतिपूर्वक आदि। उदाहरण-

- रमेश **ध्यान** से चलता है।
- श्याम **फटाफट** खाता है।
- सुधीर **मधुर** बोलता है।
- चीता **तेज** दौड़ता है।
- सुमित **गलत चाल** चलता है।
- महेश हमेशा **सच** बोलता है।
- जीतेन्द्र अच्छी **तरह** काम करता है।
- हरेन्द्र **ध्यान पूर्वक** पढ़ाई करता है।
- बाघ **धीरे-धीरे** आगे बढ़ता है।

ऐसे क्रियाविशेषण प्रायः निम्नलिखित अर्थों में आते हैं-

(i) प्रकार- ऐसे, वैसे, कैसे, मानो, धीरे, अचानक, स्वयं, स्वतः, परस्पर, यथाशक्ति, प्रत्युत, फटाफट।
(ii) निश्चय- अवश्य, सही, सचमुच, निःसन्देह, बेशक, जरूर, अलबत्ता, यथार्थ में, वस्तुतः, दरअसल।
(iii) अनिश्चय- कदाचित्, शायद, बहुतकर, यथासम्भव।
(iv) स्वीकार- हाँ, जी, ठीक, सच।
(v) कारण- इसलिए, क्यों, काहे को।
(vi) निषेध- न, नहीं, मत।
(vii) अवधारण- तो, ही, भी, मात्र, भर, तक, सा।

(6) **निश्चयवाचक क्रिया-विशेषण-** यह क्रियाविशेषण शब्द तब प्रयोग होते हैं जब हमें कोई निश्चय व्यक्त करना होता है। अर्थात् जो शब्द क्रिया में निश्चय संबंधी विशेषता को प्रकट करें, उन्हें निश्चयवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे:- अवश्य, बेशक, सचमुच, वस्तुतः, निःसंदेह, सही, जरूर, अलबत्ता, यथार्थ में, दरअसल आदि।
उदाहरण-

- मैं वहाँ **अवश्य** जाऊँगा।
- प्रीत **निःसंदेह** सफल होगा।

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

(7) **अनिश्चयवाचक क्रिया-विशेषण**- जो क्रिया विशेषण शब्द क्रिया में अनिश्चय संबंधी विशेषता को प्रकट करें, उन्हें अनिश्चयवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। अर्थात् यह क्रियाविशेषण शब्द तब प्रयोग होते हैं जब हमें क्रिया के होने की अनिश्चितता या संदेह होता है। जैसे:- मुमकिन, शायद, कदाचित, संभवतः, अक्सर, बहुतकर, यथासंभव आदि। उदाहरण-

- श्याम **शायद** चला जाए।
- देवेश **संभवतः** न पहुँच पाए।

(8) **निषेधवाचक क्रिया-विशेषण-** जो शब्द क्रिया के करने या होने का निषेध प्रकट करें, उन्हें निषेधवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। इस क्रियाविशेषण शब्द का प्रयोग हम किसी क्रिया के होने को नकारने के लिए करते हैं। जैसे : न, ना, मत, नहीं, आदि।

- उदाहरण- तुम यहाँ **मत** बैठो।
- मैं तुम्हे कुछ **नहीं** कहूँगा।

(9) **कारणवाचक क्रिया-विशेषण-** जो शब्द क्रिया के होने या करने का कारण बताएँ, उन्हें कारणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। कारणात्मक क्रियाविशेषण तब प्रयोग किये जाते हैं जब हमें किसी क्रिया के होने का कारण व्यक्त करना होता है। जैसे:- क्योंकि, उद्देश्य से, अत:, कारण, के मारे, अतएव, इसलिए, चूँकि, किसलिए, क्यों, काहे को आदि।
उदाहरण-

- कमजोरी के **कारण** वह चल नहीं सकता।
- ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी, **इसलिए** घनश्याम सो गया।

अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषण के कुछ अन्य प्रकार-
आकस्मिकतात्मक क्रियाविशेषण:- ये क्रियाविशेषण शब्द हम तब प्रयोग करते हैं जब हमें किसी क्रिया के आकस्मिक होने का बोध कराना होता है। जैसे:- सहसा, अकस्मात, अचानक, एकाएक, एकदम से आदि।
स्वीकारात्मक क्रियाविशेषण:- किसी भी क्रिया के होने को स्वीकारने के लिए स्वीकारात्मक क्रियाविशेषण का प्रयोग किया जाता है। जैसे:- हाँ, सच, ठीक, बिलकुल, जी, अच्छा आदि।
आवृत्यात्मक क्रियाविशेषण:- किसी भी क्रिया में निरंतरता दिखाने के लिए इस क्रियाविशेषण का प्रयोग किया जाता है। जैसे: गटागट, धड़ाधड़ आदि।
निष्कर्ष क्रियाविशेषण:- यह क्रियाविशेषण शब्द निष्कर्ष व्यक्त करते हैं। जैसे : अत:, इसलिए आदि।

<u>विशेष्य एवं विशेषण संबंध:-</u>

विशेष्य:- जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता विशेषण बतलाता है, उसे विशेष्य कहते हैं।
उदाहरण:- काला घोड़ा दौड़ रहा है। 'काला' शब्द विशेषण है जो घोड़ा (विशेष्य) की विशेषता बताता है।

- विशेषण का प्रयोग वाक्य में विशेष्य के बाद अथवा विशेष्य से पहले किया जा सकता है। अतः प्रयोग के आधार पर इसके दो भेद हैं –
  (i) विशेष्य विशेषण (ii) विधेय विशेषण

(i) विशेष्य विशेषण:- इसमें विशेषण शब्द, विशेष्य के पहले आता है। **जैसे:-**
(1) वह गरीब लड़का है।
(गरीब – विशेषण, लड़का – विशेष्य है)
(2) चंचल बालक खेलता है।
(चंचल – विशेषण, बालक – विशेष्य)
(3) सीता सुशील कन्या है।
(सुशील – विशेषण, कन्या – विशेष्य)
(4) काली गाय खड़ी है।
(काली – विशेषण, गाय – विशेष्य)
(5) मेहनती व्यक्ति भूखें नहीं मरते।
(मेहनती – विशेषण, व्यक्ति – विशेष्य)
(ii) विधेय विशेषण:- इसमें विशेषण शब्द, विशेष्य के बाद आता है। **जैसे:-**
(1) मेरा कुत्ता काला है।

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

(कुत्ता – विशेष्य, काला – विशेषण)

(2) मेरा लड़का आलसी है।
(लड़का – विशेष्य, आलसी – विशेषण)

(3) वह गाय बहुत काली है।
(गाय – विशेष्य, काली – विशेषण, बहुत – प्रविशेषण)

(4) आदमी बड़ा मेहनती था।
(आदमी – विशेष्य, मेहनती – विशेषण, प्रविशेषण – बड़ा)

(5) मेरी पुस्तक पुरानी है।
(पुस्तक – विशेष्य, पुरानी – विशेषण)

<u>प्रविशेषणः-</u> विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।

उदाहरणः- श्याम अत्यंत निर्धन है। (अत्यंत – प्रविशेषण,)
क्षत्रिय बड़े साहसी होते हैं। (बड़े – प्रविशेषण)
अर्चना अत्यधिक सुंदर हैं। (अत्यधिक– प्रविशेषण)

विशेषणों की रचनाः- विशेषण की रचना पाँच प्रकार के शब्दों से होती है-

(1) **व्यक्तिवाचक संज्ञा से**- गाँधीवाद से गाँधीवादी, गाजीपुर से गाजीपुरी, मुरादाबाद से मुरादाबादी।

(2) **जातिवाचक संज्ञा से**- कागज से कागजी, ग्राम से ग्रामीण, शिक्षक से शिक्षकीय, घर से घरेलू, पहाड़ से पहाड़ी, परिवार से पारिवारिक।

(3) **सर्वनाम से-** जो से जैसे (प्रकारवाचक विशेषण), वह से वैसा (सार्वनामिक विशेषण), यह से ऐसा (सार्वनामिक विशेषण), यह से इतने (संख्यावाचक विशेषण), यह से इतना (परिमाणवाचक विशेषण)।

(4) **भाववाचक संज्ञा से**- एकता से एक, अनुराग से अनुरागी, गरमी से गरम, भावना से भावुक, बनावट से बनावटी, कृपा से कृपालु इत्यादि।

(5) **क्रिया से**- उड़ना से उड़छू, खेलना से खिलाड़ी, भागना से भगोड़ा, समझना से समझदार, पठ से पठित, कमाना से कमाऊ, चलना से चालू, हँसना से हँसोड़, लड़ना से लड़ाकू, इत्यादि।

कुछ शब्द स्वंय विशेषण होते है और कुछ प्रत्यय लगाकर बनते है। जैसे-

'वान' प्रत्यय से = बल-बलवान, धन-धनवान।
'मान' प्रत्यय से = गति-गतिमान, श्री-श्रीमान।
'आलु'प्रत्यय से = कृपा-कृपालु, दया-दयालु।
'इत' प्रत्यय से = नियम-नियमित, अपमान-अपमानित, आश्रय-आश्रित, चिंता-चिन्तित ।
'ईय' प्रत्यय से = जाति-जातीय, भारत-भारतीय, स्वर्गीय, राष्ट्रीय ।
'इक' प्रत्यय से = सप्ताह-साप्ताहिक, वर्ष-वार्षिक, नागरिक, सामाजिक।
'ईला' प्रत्यय से = चमक-चमकीला, हठ-हठीला, फुर्ती-फुर्तीला।
'ई' प्रत्यय से = जापान-जापानी, गुण-गुणी, स्वदेशी, धनी, पापी।
'इन' प्रत्यय से = कुल-कुलीन, नमक-नमकीन, प्राचीन।

संज्ञा (विशेष्य) से विशेषण शब्दों की रचना

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
आयु	आयुष्मान	आकर्षण	आकृष्ट
कुंती	कौंतेय	धर्म	धार्मिक
पुरस्कार	पुरस्कृत	समर	सामरिक
राजनीति	राजनीतिक	रसायन	रासायनिक
लोभ	लुब्ध/लोभी	लघु	लाघव
श्रद्धा	श्रद्धेय/ श्रद्धालु	वन	वन्य

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

भूगोल	भौगोलिक	बुद्धि	बौद्धिक
इतिहास	ऐतिहासिक	अंत	अंतिम
घर	घरेलू	गुण	गुणवान/गुणी
जल	जलीय	चिंता	चिंत्य/चिंतनीय/चिंतित
तिरस्कार	तिरस्कृत	जागरण	जागरित/जाग्रत
दर्शन	दार्शनिक	दया	दयालु
माता	मातृक	मास	मासिक
उपकार	उपकृत/ उपकारक	उत्कर्ष	उत्कृष्ट
काँटा	कँटीला	उपेक्षा	उपेक्षित/उपेक्षणीय
ग्रहण	गृहीत/ग्राह्य	ग्राम	ग्राम्य/ग्रामीण
आशा	आशित/ आशान्वित/ आशावानी	अर्थ	आर्थिक
इच्छा	ऐच्छिक	ईश्वर	ईश्वरीय
लोहा	लौह	राष्ट्र	राष्ट्रीय
वायु	वायव्य/ वायवीय	लाभ	लब्ध/लभ्य
शरीर	शारीरिक	विवाह	वैवाहिक
सभा	सभ्य	संसार	सांसारिक
अग्नि	आग्नेय	उपयोग	उपयोगी/उपयुक्त
पुरुष	पौरुषेय	परलोक	पारलौकिक
प्रमाण	प्रामाणिक	पृथ्वी	पार्थिव
हृदय	हार्दिक	सूर्य	सौर/सौर्य
आदि	आदिम	क्षेत्र	क्षेत्रीय
उदय	उदित	इच्छा	ऐच्छिक
कर्म	कर्मठ/कर्मी/ कर्मण्य	उन्नति	उन्नत
गृहस्थ	गार्हस्थ्य	क्रोध	क्रोधालु, क्रोधी
राधा	राधेय	कथन	कथित
घाव	घायल	गर्व	गर्वीला
जहर	जहरीला	जटा	जटिल
देव	दैविक/दैवी	तत्त्व	तात्त्विक
दर्द	दर्दनाक	दिन	दैनिक
अणु	आणविक	आदर	आदरणीय
गंगा	गांगेय	तुंद	तुंदिल
दीक्षा	दीक्षित	धन	धनवान
निषेध	निषिद्ध	नियम	नियमित
पर्वत	पर्वतीय	प्रसंग	प्रासंगिक
प्रकृति	प्राकृतिक	प्रदेश	प्रादेशिक
भूमि	भौमिक	बुद्ध	बौद्ध
मुख	मौखिक	मृत्यु	मर्त्य
चयन	चयनित	नगर	नागरिक
निश्चय	निश्चित	निंदा	निंद्य/निंदनीय
रक्त	रक्तिम	विनता	वैनतेय

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

सर्वनाम से विशेषण शब्दों की रचना

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
हम	हमारा	मैं	मेरा/मुझ-सा
जो	जैसा	कोई	कोई-सा
वह	वैसा	कौन	कैसा
यह	ऐसा	तुम	तुम्हारा

क्रिया से विशेषण शब्दों की रचना

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
लूटना	लुटेरा	घटना	घटित
सड़ना	सड़ियल	अड़ना	अड़ियल
खाना	खाऊ	उड़ना	उड़ाकू
मिलन	मिलनसार	पत्	पतित
खेलना	खिलाड़ी	भूलना	भुलक्कड़
रक्षा	रक्षक	पठ	पठित
कमाना	कमाऊ	बेचना	बिकाऊ
लड़ना	लड़ाकू	पीना	पियक्कड़

अव्यय से विशेषण शब्दों की रचना

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
आगे	अगला	नीचे	निचला
पीछे	पिछला	ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी	भीतर	भीतरी

विशेष्य एवं विशेषण शब्दों का परिवर्तन –

विशेष्य		विशेषण
व्याकरण	-	वैयाकरण
व्यवहार	-	व्यावहारिक
व्यवस्था	-	व्यवस्थित
व्यवसाय	-	व्यवसायी, व्यावसायिक
व्यक्ति	-	वैयक्तिक
शरद् /शरत्	-	शारदीय
शरण	-	शरणागत
शक्ति	-	शाक्त
शक	-	शक्की
शंका	-	शंकालु, शंकित
व्यापार	-	व्यापारी, व्यापारक, व्यापारिक
व्याख्यान	-	व्याख्याता
व्याख्या	-	व्याख्येय
वैधव्य	-	विधवा
वैचित्र	-	विचित्र
वेद	-	वैदिक
वेतन	-	वैतनिक
विस्मय	-	विस्मित
विस्तार	-	विस्तीर्ण, विस्तृत

विशेष्य		विशेषण
विष्णु	-	वैष्णव
विषाद	-	विषण्ण
विषय	-	विषयी
विष	-	विषाक्त
विश्वास	-	विश्वासी, विश्वस्त, विश्वसनीय
विश्लेषण	-	विश्लिष्ट
विशेष	-	विशिष्ट
विवेक	-	विवेकी
विवाह	-	वैवाहिक
विवाद	-	विवादग्रस्त, विवादी विवादास्पद,विवादित,
विलास	-	विलासी
विलायत	-	विलायती
भक्षण	-	भक्षित
भक्ति	-	भक्त
भंजन	-	भंगुर
ब्रह्म	-	ब्रह्मा
ब्याह	-	ब्याहता
बोझ	-	बोझिल
बेवफाई	-	बेवफा

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
बेवकूफी	-	बेवकूफ
बूझना	-	बुझक्कड़
बुलंदी	-	बुलंद
बुराई	-	बुरा
बुभुक्षा	-	बुभुक्षित
बुद्धि	-	बौद्धिक
बुद्ध	-	बौद्ध
बुजुर्ग	-	बुजुर्गाना
बीच	-	बिचला
बिहार	-	बिहारी
बिलगाव	-	बिलग
बिकना	-	बिकाऊ
बालक	-	बाल्य
बारह	-	बारहवाँ
बाधा	-	बाधित
बाजार	-	बाजारू
बल	-	बलिष्ठ
बर्फ	-	बर्फीला
बन	-	बनैला
विद्युत	-	वैध्युत
विद्या	-	विद्यावान्
विज्ञान	-	वैज्ञानिक
विजय	-	विजयी, विजेता
विचार	-	वैचारिक, विचारणीय,
विगलन	-	विगलित
विकास	-	विकसित
विकार	-	विकृत, विकारी
विकल्प	-	वैकल्पित
वास्तव	-	वास्तविक
वायु	-	वायव्य, वायवीय
वाद	-	वादी
वस्तु	-	वास्तविक
वसंत	-	वासंत, वासंतिक, वसंती
वर्ष	-	वार्षिक
वर्णन	-	वर्णनीय
वर्ण	-	वर्णित
वन	-	वनैला, वन्य
वध	-	वध्य
वत्स	-	वत्सल
हृदय	-	हार्दिक
हेमंत	-	हेमंती
हृदय	-	हार्दिक
हिम	-	हेम
हिन्द	-	हिन्दी
हित	-	हितैषी
हिंसा	-	हिंसक
हवा	-	हवाई

विशेष्य		विशेषण
हल	-	हलन्त्
हर्ष	-	हर्षित
हराम	-	हरामी
हठ	-	हठी
हँसी	-	हँसोड़, हँसमुख
स्वास्थ्य	-	स्वस्थ
स्वाद	-	स्वादिष्ट, स्वादु
स्वर्ण	-	स्वर्णिम
स्वर्ण	-	स्वर्णिम
स्वर्ग	-	स्वर्गीय, स्वर्गिक
स्वभाव	-	स्वाभाविक
स्वप्न	-	स्वप्निल
स्वदेश	-	स्वदेशी, स्वादेशिक
स्मृति	-	स्मृत, स्मार्त
स्मरण	-	स्मरणीय
स्नायु	-	स्नायविक
स्थान	-	स्थानीय, स्थानिक
स्त्री	-	स्त्रैण
स्तुति	-	स्तुत्य
सोना	-	सुनहला, सुनहरा
सेवा	-	सेवी, सेव्य
सूर्य	-	सौर
सूचना	-	सूचित
सुरभि	-	सुरभित
सुर	-	सुरीला
सुन्दरता	-	सुन्दर
सुगन्ध	-	सुगन्धित
सुख	-	सुखी
सीमा	-	सीमित
सिद्धान्त	-	सैद्धान्तिक
सिंधु	-	सैंधव
साहित्य	-	साहित्यिक
साहस	-	साहसी, साहसिक
साल	-	सालाना
साधन	-	साध्य
सागर	-	सागरिक
सहकार	-	सहकारी
सरकार	-	सरकारी
सम्मान	-	सम्मानित, सम्मान्य
सम्बन्ध	-	सम्बन्धित, सम्बद्ध, सम्बन्धी
सम्प्रदाय	-	साम्प्रदायिक
सम्पादक	-	सम्पादकीय
सम्पत्ति	-	सम्पन्न
समुद्र	-	समुद्री, सामुद्र, सामुद्रिक
समुदाय	-	सामुदायिक
समास	-	सामासिक
समाज	-	सामाजिक

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
समर	-	सामरिक
समय	-	सामयिक
सभा	-	सभ्य
सप्ताह	-	साप्ताहिक
सन्देह	-	संदिग्ध
सखा	-	सख्य
संस्कृति	-	सांस्कृतिक
संसार	-	सांसारिक
संयोग	-	संयुक्त
संयम	-	संयमी
संभाषण	-	संभाष्य
संपत्ति	-	साम्पत्तिक, सम्पन्न
संध्या	-	सांध्य
संदेह	-	संदिग्ध
संताप	-	संतप्त
संचय	-	संचित
संघात	-	सांघातिक
संख्या	-	सांख्यिक, संख्येय
संक्षेप	-	संक्षिप्त
संकोच	-	संकुचित
संकेत	-	सांकेतिक
संकल्प	-	संकल्पित
श्रृंगार	-	श्रृंगारिक
श्रृंखला	-	श्रृंखलित
श्री	-	श्रीमान्
श्रम	-	श्रमिक
श्रम	-	श्रमी
श्रद्धा	-	श्रद्धेय, श्रद्धालु
श्याम	-	श्यामल
शौक	-	शौकीन
शोषण	-	शोषित
शोभा	-	शोभित
शोक	-	शोकाकुल
शील	-	शिष्ट
शिव	-	शैव
शिक्षा	-	शिक्षित, शैक्षिक
शिकारी	-	शिकार
शास्त्र	-	शास्त्रीय
शासन	-	शासित, शासक
शाप	-	शापित
शान	-	शानदार
शांति	-	शांत
शहादत	-	शहीद
शहर	-	शहरी
शर्त	-	शर्तिया
शरीर	-	शारीरिक

विशेष्य		विशेषण
वंश	-	वंशीय
वंदना	-	वंदनीय/वन्द्य
लोहा	-	लौह
लोभ	-	लोभी/लुब्ध
लोक	-	लौकिक
लेखन, लेख	-	लिखित
लावण्य	-	लवण
लाभ	-	लभ्य/लब्ध
लात	-	लतियल
लाड	-	लाडला
लाठी	-	लठैत
लाज	-	लजालू
लय	-	लीन
लड़ना	-	लड़ाकू
लज्जा	-	लज्जालु, लज्जित
लजाना	-	लजीला
लघु	-	लाघव
लगनौ	-	लगावट
लखनऊ	-	लखनवी
लक्षण	-	लाक्षणिक, लक्ष्य
लंब	-	लंबा
लंपटता	-	लंपट
लंठई	-	लंठ
लंघन	-	लंघित
लंगोट	-	लंगोटिया
लंगड़ाना	-	लंगड़ा
लंग	-	लंगड़ा
लंका	-	लंकेश
रोमांच	-	रोमांचक, रोमांचित
रोम	-	रोमिल
रोब	-	रोबीला
रोज	-	रोजाना
रोग	-	रोगी
रेत	-	रेतीला
रूप	-	रूपवान
रूद्र	-	रौद्र
रूढ़ि	-	रूढ़
रूचि	-	रूचिर
रिहाई	-	रिहा
राह	-	राही
राष्ट्र	-	राष्ट्रीय
राधा	-	राधेय
राजा	-	राजसी
राजनीति	-	राजनीतिक
पत्थर	-	पथरीला

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
राज	-	राजकीय
राक्षस	-	राक्षसी
रसीद	-	रसीदी
रसायन	-	रासायनिक
रस	-	रसिक, रसीला
रमण	-	रमणीय
रथ	-	रथी
रति	-	रत
रटना	-	रट्टू
रचना	-	रचित
रक्त	-	रक्तिम
रंग	-	रंगीला, रंगीन
योग	-	योगी, यौगिक
युद्ध	-	योद्धा
युक्ति	-	युक्त
यादव	-	यादवीय
यात्रा	-	यात्री
यश	-	यशस्वी
यवन	-	यवनीय
यदि	-	यदीय
यज्ञ	-	याज्ञिक
मौसा	-	मौसेरा
मोह	-	मुग्ध
मैल	-	मैला
मेधा	-	मेधावी
मृदु	-	मृदुल
मृत्यु	-	मर्त्य
मूल	-	मौलिक
मूर्ति	-	मूर्त
मूर्च्छा	-	मूर्च्छित
मुख	-	मुखर, मौखिक
मिथिला	-	मैथिल
मिथिल	-	मैथिल
मिठास	-	मीठा
माह	-	माहवारी
मास	-	मासिक
माल	-	मालदार
माया	-	मायावी, मायिक
मामा	-	ममेरा
मानस	-	मानसिक
बखेड़ा	-	बखेड़िया
फौज	-	फौजी
फेन	-	फेनिल
फूस	-	फूसदार
फूफा	-	फुफेरा
फुसलाना	-	फुसलाऊ
फुर्ती	-	फुर्तीला

विशेष्य		विशेषण
फिक्र	-	फिक्रमंद
फसाद	-	फसादी
फसल	-	फसली
फल	-	फलित
प्रौढ़ता	-	प्रौढ़
प्रेषण	-	प्रेषित
प्रेम	-	प्रेमी
प्रार्थना	-	प्रार्थित, प्रार्थनीय
प्राप्ति	-	प्राप्त
प्रान्त	-	प्रान्तीय
प्रातःकाल	-	प्रातःकालीन
प्राण	-	प्राणद
प्राचीनता	-	प्राचीन
प्राची	-	प्राच्य
प्रस्ताव	-	प्रस्तावित, प्रस्तुत
प्रसाद	-	प्रसन्न
प्रसव	-	प्रसूता
प्रसंग	-	प्रासंगिक
प्रशंसा	-	प्रशंसनीय/प्रशंसित
प्रवेश	-	प्रविष्ट
प्रवास	-	प्रवासी
प्रवंचना	-	प्रवंचित
प्रमाण	-	प्रामाणिक
प्रणाम	-	प्रणम्य
प्रभाव	-	प्रभावित
प्रदेश	-	प्रादेशिक
प्रदान	-	प्रदत्त
प्रथम	-	प्राथमिक
प्रतीक्षा	-	प्रतीक्षित
प्रतिष्ठ	-	प्रतिष्ठित
विरोध	-	विरुद्ध
विरह	-	विरही
वियोग	-	वियोगी, वियुक्त
विमान	-	वैमानिक
विभाजन	-	विभाजित, विभक्त
विभक्ति	-	विभक्त
विपलायन	-	विपलायित
विपर्यय	-	विपरीत, विपर्यस्त
विपत्ति/विपद्	-	विपलायित
विपत्ति	-	विपन्न
विनय	-	विनीत, विनयी
विधुरता	-	विधुर
विधि	-	वैध
विधान	-	वैधानिक, विहित
*विद्वान	-	वैदुष्य
(*विद्वान स्वयं भी कही-कही विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है)		
मानव	-	मानवीय

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
मान	-	मानी, मान्य
माधुर्य	-	मधुर
मात्रा	-	मात्रिक
माता	-	मातृत्व, मातृक
मांस	-	मांसल
मल	-	मलिन
मर्म	-	मार्मिक
मर्द	-	मर्दाना
मरना	-	मरियल
मनुष्य	-	मानुष्य, मानुषिक
मनु	-	मनुजात
मनीषा	-	मनीषी
मनन	-	मननशील
मन	-	मानसिक
मध्यम	-	माध्यमिक
मधु	-	मधुर
मथुरा	-	माथुर
मति	-	मतिमान
मतलब	-	मतलबी
मजाक	-	मजाकिया
मजा	-	मजेदार
मजहब	-	मजहबी
मगध	-	मागधी/मागध
मंगल	-	मांगलिक, मंगलमय
भ्रम	-	भ्रामक, भ्रमित
भ्रंश	-	भ्रष्ट
पहुनाई	-	पाहुन, पहुना
पहाड़	-	पहाड़ी
पहरा	-	पहरेदार
पश्चिम	-	पाश्चात्य, पश्चिमी
पशु	-	पाशविक, पाशव
पल्लव	-	पल्लवित
पर्वत	-	पर्वतीय
परीक्षा	-	परीक्षित
परिवार	-	पारिवारिक
परिवर्तन	-	परिवर्तित
परिभाषा	-	पारिभाषिक
परितोष	-	पारितोषिक
परिचय	-	परिचित
पराजय	-	पराजित
परस्पर	-	पारस्परिक
परलोक	-	पारलौकिक
परतंत्रता	-	परतंत्र
परख	-	पारखी
पय	-	पयस्वी
पथ	-	पाथेय

विशेष्य		विशेषण
पतन	-	पतित
पढ़ना	-	पढ़ाकू
पड़ोस	-	पड़ोसी
पठन	-	पठनीय
पक्ष	-	पाक्षिक
पंथ	-	पंथी
पंगुता	-	पंगु
पंक्ति	-	पांक्तेय
पंक	-	पंकिल
न्यूनता	-	न्यून
न्यास	-	न्यासी
न्याय	-	न्यायी, न्यायिक
नौकरी	-	नौकर
नौ	-	नौवाँ
नोक	-	नुकीला
नुमाइश	-	नुमाइशी
नीति	-	नैतिक
निसर्ग	-	नैसर्गिक
निष्ठा	-	नैष्ठिक/निष्ठावान
निष्कासन	-	निष्कासित
निषेध	-	निषिद्ध
निश्चय	-	निश्चित
निशा	-	नैश
निवेदन	-	निवेदित
निर्वासन	-	निर्वासित
निर्माण	-	निर्मित
निराकरण	-	निराकृत
नियोजन	-	नियोजित
नियुक्ति	-	नियुक्त
नियम	-	नियमित
निपुणता	-	निपुण
निन्दा	-	निन्दक
निद्रा	-	निद्रालु
निज	-	निजी
निंदा	-	निंदनीय, निन्द्य
नाश	-	नाशवान
नाव	-	नाविक
नाम	-	नामी
नाटक	-	नाटकीय
नाक	-	नक्कू
नहर	-	नहरी
नरक	-	नारकीय
नम्रता	-	नम्र
नमक	-	नमकीन
नजदीक	-	नजदीकी
नगर	-	नागरिक
नकल	-	नकली

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
ध्वंश	-	ध्वस्त
धैर्य	-	धीर
धृष्टता	-	धृष्ट
धूम	-	धूमिल
धुंध	-	धुँधला
धान	-	धनहर
धर्म	-	धार्मिक
धन	-	धनी, धनवान
द्रव	-	द्रवित
दौलत	-	दौलतमंद
दोष	-	दोषी, दोषित, दुष्ट
पुच्छ	-	पुच्छल
पीना	-	पियक्कड़
पीड़ा	-	पीड़ित
पीछे	-	पिछड़ा
पीछा	-	पिछला
पिशाच	-	पैशाचिक
पिता	-	पैतृक
पालना	-	पालतू
पाप	-	पापी
पान, पीना	-	पेय
पाठक	-	पाठकीय
पाठ	-	पाठ्य
पाचन	-	पाचक
पाँच	-	पाँचवाँ
अभिनय	-	अभिनेय
अपेक्षा	-	अपेक्षित
अपराध	-	अपराधी
अपमान	-	अपमानित
अपकार	-	अपकारी
अन्याय	-	अन्यायी
अन्तर	-	आन्तरिक
अन्त	-	अन्तिम, अन्त्य
अनुष्ठान	-	अनुष्ठित, आनुष्ठानिक
अनुश्रुति	-	अनुश्रुत
अनुशासन	-	अनुशासित
अनुशंसा	-	अनुशांसित
अनुवाद	-	अनुदित, अनुवादित, अनुवाद्य
अनुराग	-	अनुरागी
अनुरक्ति	-	अनुरक्त
अनुमोदन	-	अनुमोदित
अनुमान	-	अनुमानित
अनुभूति	-	अनुभूत
अनुभव	-	अनुभवी, आनुभाविक
अनुपात	-	आनुपातिक
अनुक्रम	-	आनुक्रमिक

विशेष्य		विशेषण
अनीति	-	अनैतिक
अनासक्ति	-	अनासक्त
अनादर	-	अनादृत
अध्यापन	-	अध्यापित
अध्यात्म	-	आध्यात्मिक
अध्ययन	-	अधीत
अधिक्रमण	-	अधिक्रांत
अधिकार	-	अधिकारी, आधिकारिक
अतृप्ति	-	अतृप्त
अतिरंजन	-	अतिरंजित
अणु	-	आणविक
अज्ञान	-	अज्ञानी
अजय	-	अजित
अच्छाई	-	अच्छा
अग्नि	-	आग्नेय
देह	-	दैहिक
देश	-	देशीय, देशी
देव	-	दैवी, दैविक
देखना	-	देखवैया
दृढ़ता	-	दृढ़
दूषण	-	दूषित
दूध	-	दुधिया, दुधार
दूत	-	दौत
दुर्विनय	-	दुर्विनीत
दुर्गति	-	दुर्गत
दुम	-	दुमदार
दुबलापन	-	दुबला
दुनिया	-	दुनियावी
दुःख	-	दुःखी
दीवानी	-	दीवान
दीप्ति	-	दीप्त
दीनता	-	दीन
दिवाला	-	दिवालिया
दिल	-	दिली
दिमाग	-	दिमागी
दिन	-	दैनिक
दाह	-	दग्ध
दाह	-	दाहक
दासता	-	दास
दारिद्रय	-	दरिद्र
दाम	-	दामी
दाना	-	दानेदार
दान	-	दानी
दाढ़ी	-	दढ़ियल
दाग	-	दागी
दाखिला	-	दाखिल

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
दस्त	-	दस्तवार
दस	-	दसवाँ
दशरथ	-	दशरथी
दलन	-	दलित
दल	-	दलीय
दर्शन	-	दर्शनीय, दार्शनिक
दर्प	-	दर्पित
दर्द	-	दर्दनाक
दरिया	-	दरियाई
दया	-	दयालू, दयामय
दम्पत्ति	-	दाम्पत्य
दमन	-	दमित
दबाव	-	दब्बू
दबना	-	दब्बू
दफा	-	दफादार
दन्त	-	दन्त्य
दनु	-	दानव
दगा	-	दगाबाज
दक्षता	-	दक्ष
दंश	-	दंशित
दंड	-	दंडनीय
थकान	-	थकित/थका
अवश्य	-	आवश्यक
अवरोध	-	अवरुद्ध
अवयव	-	आवयविक
अवतार	-	अवतीर्ण
अलंकार	-	अलंकृत, आलंकारिक
अर्थ	-	आर्थिक
अरण्य	-	आरण्यक
अभ्यास	-	अभ्यासी, अभ्यस्त
अभिषेक	-	अभिषिक्त
भोजन	-	भोज्य
भेद	-	भेदिया
भूषण	-	भूषित
भूलना	-	भुलक्कड़
भूमि	-	भौमिक
भूत	-	भौतिक
भूगोल	-	भौगोलिक
भूख	-	भूखा
भीख	-	भिखारी
भाषा	-	भाषिक
भाव	-	भावुक/भावी
भारत	-	भारतीय
भार	-	भारी
भाग्य	-	भाग्यवान
भागना	-	भगोड़ा
भवन	-	भव्य

विशेष्य		विशेषण
भलाई	-	भला
भय	-	भयानक
भड़क	-	भड़कीला
भट्टी	-	भठियारा
भगवत्	-	भागवत
प्रतिबिम्ब	-	प्रतिबिम्बित
प्रकृति	-	प्राकृतिक
प्यास	-	प्यासा
प्यार	-	प्यारा
पेट	-	पेटू
पृथ्वी	-	पार्थिव
पृथु	-	पृथुल
पूर्व	-	पूर्वी
पूजा	-	पूज्य, पूजनीय
पुस्तक	-	पुस्तकीय
पुष्प	-	पुष्पित
पुष्ट, पुष्टि	-	पौष्टिक
पुश्त	-	पुश्तैनी
पुलक	-	पुलकित
पुरुष	-	पौरुषेय
पुरातत्व	-	पुरातात्विक
पुराण	-	पौराणिक
पुरा	-	पुरातन
अक्ल	-	अक्लमंद
अकर्म	-	अकर्मण्य
अंश	-	आंशिक
अंतर	-	आंतरिक
अंचल	-	आंचलिक
अंग	-	आंगिक
अंकुश	-	अंकुशित
अंकुरण	-	अंकुरणीय
अंकुर	-	अंकुरित
अंकन	-	अंकित
अंक	-	अंकित
त्वरा	-	त्वरित
त्रुटि	-	त्रुटित
त्रास	-	त्रस्त
त्राण	-	त्राता
त्रयी	-	त्रय
त्याग	-	त्यागी, त्याज्य
तैरना	-	तैराक
तेल	-	तेलिया
तेज	-	तेजस्वी
तृष्णा	-	तृष्णावान
तृष	-	तृषित
तृप्ति	-	तृप्त

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
तुष्टि	-	तुष्ट
तुला	-	तुल्य
तुलना	-	तुलनीय, तुल्य
तुनक	-	तुनकमिजाज
तुतलाहट	-	तोतला
तुक	-	तुक्कड़
तुंद	-	तुंदिल
तीन	-	तीसरा
तीखापन	-	तीखा
तिलस्म	-	तिलस्मी
तिरोधान	-	तिरोहित
तिरस्कार	-	तिरस्कृत
तालु	-	तालव्य
ताप	-	तापित, तप्त
ताजगी	-	ताजा
ताकत	-	ताकतवर
तल्खी	-	तल्ख
तलब-	-	तलबगार
तर्क	-	तार्किक
तरुणाई	-	तरुण
तरलता	-	तरल
तरण	-	तरणीय
तरंग	-	तरंगित
तम्	-	तामसिक
तमाशा	-	तमाशाई, तमाशबीन
तबाही	-	तबाह
तपस्या	-	तपस्वी
तप	-	तप्त
तन्द्रा	-	तन्द्रिल
तन्त्र	-	तान्त्रिक
गंदगी	-	गंदा
गंगा	-	गांगेय, गांग, गँगवट
ख्याति	-	ख्यात
खेल	-	खिलाड़ी
खेद	-	खिन्न
खून	-	खूनी
खार	-	खारा
खाना	-	खाऊ
खानदान	-	खानदानी
खान	-	खनिज
खर्च	-	खर्चीला
खयाल	-	खयाली
खपड़ा	-	खपड़ैल
खतरा	-	खतरनाक
कड़वापन	-	कड़वा
कठिनता	-	कठिन
कंप	-	कंपित

विशेष्य		विशेषण
कंटक	-	कंटकित
कंगूरा	-	कंगूरेदार
कंकड़	-	कंकड़ीला
औरत	-	जनाना
औचित्य	-	उचित
ओहदा	-	ओहदेदार
ओष्ठ	-	ओष्ठ्य
ओज	-	ओजस्वी
ओछापन	-	ओछा
ऐश	-	ऐयाश
एहसान	-	एहसानमंद
एषण	-	इष्ट
एशिया	-	एशियाई
एकीकरण	-	एकीकृत
एकांत	-	एकांतिक
एक	-	ऐकिक
ऋषि	-	आर्ष
ऋतु	-	आर्तव
ऋण	-	ऋणी
ऊर्मि	-	उर्मिल
ऊपर	-	ऊपरी
ऊँचाई	-	ऊँचा
उल्लास	-	उल्लसित
उपेक्षा	-	उपेक्षित, उपेक्षणीय
उपार्जन	-	उपार्जित
उपहार	-	उपहारी, उपहारिन्
उपस्थिति	-	उपस्थित
उपवन	-	औपवनिक
उपलब्धि	-	उपलब्ध
उपयोग	-	उपयोगी, उपयुक्त
उपमा	-	उपमित
उपन्यास	-	औपन्यासिक
उपनिषद्	-	औपनिषदिक
उपनिवेशक	-	औपनिवेशिक
उपनयन	-	उपनीत
उपद्रव	-	उपद्रवी
उपदेश	-	उपदेशक,उपदिष्ट,उपदेशात्मक
उपज	-	उपजाऊ
तत्व	-	तात्विक
तत्परता	-	तत्पर
तत्त्व	-	तात्त्विक
तटस्थता	-	तटस्थ
तट	-	तटीय
जिस्म	-	जिस्मानी
जाल	-	जाली
जान	-	जानदार
जादू	-	जादूगर

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
जाति	-	जातीय
जागरण	-	जाग्रत, जागरित
जाँचना	-	जाँचकर्ता
जहर	-	जहरीला
जवाब	-	जवाबी
जवान	-	जवानी
जल्दी	-	जल्द
जल	-	जलीय
जरूर	-	जरूरी
जय	-	जयी, जेय
जड़ना	-	जड़ाऊ
जड़ता	-	जड़
जटा	-	जटिल
जंगल	-	जंगली
छेदन	-	छिन्न
छेद	-	छेदक
छूत	-	छूतहा
छिद्र	-	छिद्रित
छिछोरापन	-	छिछोरा
छाया	-	छायादार, छायाभ
छाँह	-	छाँहदार
छह	-	छठा
छवि	-	छबीला
छल	-	छली, छलिया
छत	-	छतदार
च्युति	-	च्युत
चौमुख	-	चौमुखा
चौमास	-	चौमासा
चैत	-	चैती
चेष्टा	-	चेष्टित
चेतना/चेतन्य	-	चेतन
चूड़ी	-	चूड़ीदार
चुस्ती	-	चुस्त
चुराना	-	चोर
चुनाव	-	चुनिंदा
चुगली	-	चुगलखोर
चुंबन	-	चुंबित
चुंबक	-	चुंबकीय
चीन	-	चीनी
चिह्न	-	चिह्नित
चिरजीवन	-	चिरंजीवी
चिन्ता	-	चिन्तित, चिन्त्य, चिन्तनीय
चित्र	-	चितेरा, चित्रित
चाह	-	चहेता
चालाकी	-	चालाक
चार	-	चौथा

विशेष्य		विशेषण
चाटना	-	चटोर
चाचा	-	चचेरा
चश्म	-	चश्मदीद
चलना	-	चालू
तंबूल	-	तंबोली
तंद्रा	-	तंद्रिल
तंदूर	-	तंदूरी
तंत्र	-	तांत्रिक
तंगी	-	तंग
ढोलक	-	ढोलकिया
ढोंग	-	ढोंगी
ढील	-	ढीला
ढाल	-	ढलवाँ
ढाल	-	ढालू
ढक्कन	-	ढक्कनदार
ढंग	-	ढंगी
डाह	-	डाही
डाक्टर	-	डाक्टरी
डाक	-	डाकीय
डराना	-	डरावना
डर	-	डरपोक
डकैती	-	डकैत
डंडी	-	डंडीदार
डंक	-	डंकदार
ठाट	-	ठाटदार
ठण्ड	-	ठण्डा
टूटना	-	टूटा
टिकना	-	टिकाऊ
टकसाल	-	टकसाली
टंकण	-	टंकित
झूठ	-	झूठा
झिलमिलाना	-	झिलमिल
झालर	-	झालरदार
झाड़ी	-	झाड़ीदार
झाँसा	-	झाँसू, झाँसिया
झब्बा	-	झब्बेदार
झगड़ा	-	झगड़ालू
झक	-	झक्की
झंझट	-	झंझटिया
झंकार	-	झंकृत
ज्वाला	-	ज्वलित
ज्योतिष	-	ज्योतिषी
ज्ञापन	-	ज्ञापित
ज्ञान	-	ज्ञानी, ज्ञात
ज्ञात	-	ज्ञातव्य
जोश	-	जोशीला
जोगी	-	जोगिया

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
जेहन	-	जहीन
जेब	-	जेबी
जूठन	-	जूठा
जुदाई	-	जुदा
जुठारना	-	जुठा
जुझार	-	जुझारू
जुआ	-	जुआड़ी
जीवन	-	जीवित
जीव	-	जैविक
चर्वण	-	चर्वित
चर्चा	-	चर्चित
चरित्र	-	चारित्रिक
चम्पा	-	चम्पाई
चमत्कार	-	चमत्कृत
चपल	-	चपलता
चन्द्र	-	चान्द्र
चक्षु	-	चाक्षुष
चक्र	-	चक्रित
चक्कर	-	चक्करदार
चंद्रिका	-	चंद्रिकामय
चंचल	-	चंचलता
चंगापन	-	चंगा
घृणा	-	घृणित, घृण्य
घूमना	-	घुमंतू
घास	-	घसियारा
घाव	-	घायल
घात	-	घातक
घर	-	घरेलू
घमण्ड	-	घमण्डी
घनिष्ठता	-	घनिष्ठ
घटना(घटन)	-	घटित, घटनीय
घटना(कम होना)	-	घटिया
ग्रास	-	ग्रस्त
ग्राम	-	ग्रामीण, ग्राम्य
गौरव	-	गौरवित, गौरवान्वित
गोबर	-	गोबरैला
गोत्र	-	गोत्रीय
गेरू	-	गेरुआ
गृहस्थ	-	गार्हस्थ्य
गुस्सा	-	गुस्सैल
गुलाब	-	गुलाबी
गुण	-	गुणी, गुणवान
गुंडई	-	गुंडा
गायन	-	गेय, गुय
गाना	-	गवैया
गाँव	-	गँवार, गँवारू, गँवई
गाँठ	-	गाँठदार

विशेष्य		विशेषण
गश्त	-	गश्ती
गवाही	-	गवाह
गलती	-	गलत
गर्व	-	गर्वीला
गर्मी	-	गर्म
गरीबी	-	गरीब
गमन	-	गत
गम	-	गमगीन
गफलत	-	गाफिल
गणना	-	गण्य
गठन	-	गठीला
गंवेषण	-	गंवेषणीय
गंभीरता	-	गंभीर
गंधर्व	-	गांधर्व
गंधक	-	गंधकी
गंधक	-	गन्धिक
गंध	-	गंधकारी
उपचार	-	उपचारक
उपकार	-	उपकृत, उपकारक, उपकारी
उन्मुक्ति	-	उन्मुक्त
उन्नति	-	उन्नत
उद्वेग	-	उद्विग्न
उद्योग	-	औद्योगिक
उद्बोधन	-	उद्बोधक
उद्धरण	-	उद्धृत
उदीचि	-	औदीच्य
उदय	-	उदित
उत्साह	-	उत्साहित
उत्पीड़न	-	उत्पीड़ित
उत्पात	-	उत्पाती
उत्पत्ति	-	उत्पन्न
उत्तेजना	-	उत्तेजित
उत्तीर्ण	-	उत्तीर्णित
उत्ताप	-	उत्तप्त
उत्तर	-	उत्तरी
उत्कर्ष	-	उत्कृष्ट
उतावल	-	उतावला, उतावली
उच्चारण	-	औच्चारणिक, उच्चारित, उच्चारणीय
उक्ति	-	उक्त
ईश्वर	-	ईश्वरीय
ईर्ष्या	-	ईर्ष्यालु, ईर्ष्य
ईमान	-	ईमानदार
ईप्सा	-	ईप्सित
इहलोक	-	इहलौकिक, ऐहलौकिक
इन्द्रजाल	-	ऐन्द्रजालिक
इन्द्र	-	ऐन्द्र
इतिहास	-	ऐतिहासिक

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**

विशेष्य		विशेषण
इज्जत	-	इज्जतदार
इच्छा	-	ऐच्छिक, इष्ट
इंद्रिय	-	ऐंद्रिक
आसमान	-	आसमानी
आसन	-	आसीन
आसक्ति	-	आसक्त
आश्रय	-	आश्रित
आश्चर्य	-	आश्चर्यित
आशा	-	आशान्वित
आवेश	-	आवेशित
आरोहण	-	आरूढ़
आरोप	-	आरोपित
आराधना	-	आराध्य
आरंभ	-	आरंभिक
आयु	-	आयुष्मान्
आभूषण	-	आभूषित
आन	-	आनी
आधार	-	आधारित, आधृत
आदि	-	आदिम, आद्य
आदर	-	आदरणीय, आदृत
आत्मा	-	आत्मिक, आत्मीय, आत्मिक
आडम्बर	-	आडम्बरी
आचरण	-	आचरित
आकाश	-	आकाशीय
आकलन	-	आकलित
आकर्षण	-	आकृष्ट
खण्ड	-	खण्डित
खजूर	-	खजूरी
क्षोभ	-	क्षुब्ध
क्षेत्र	-	क्षेत्रीय
क्षुधा	-	क्षुधित
क्षार	-	क्षारीय
क्षय	-	क्षीण, क्षयी
क्षमा	-	क्षम्य
क्षत्रिय	-	क्षात्र
क्षण	-	क्षणिक
क्लेश	-	क्लिष्ट
क्रोध	-	क्रुद्ध, क्रोधित

विशेष्य		विशेषण
क्रय	-	क्रीत
कल्पना	-	काल्पनिक, कल्पित
कौम	-	कौमी
कौटिल्य	-	कुटिल, कुटिलता
कोप	-	कुपित
कैवल्य	-	केवल
केसर	-	केसरिया
केन्द्र	-	केन्द्रीय, केन्द्रित
कृषि	-	कृषक
कृपा	-	कृपालु
कुसुम	-	कुसुमित
कुल	-	कुलीन
कुत्सा	-	कुत्सित
कुटुंब	-	कौटुंबिक
कुकर्म	-	कुकर्मी
कुंडल	-	कुंडली
किस्मत	-	किस्मतवार
किताब	-	किताबी
काल	-	कालिक, कालीन
काया	-	कायिक
काम	-	कामी, काम्य, कामुक
कागज	-	कागजी
काँटा	-	कँटीला
कसरत	-	कसरती
कल्पना	-	कल्पित, काल्पनिक
कलुष	-	कलुषित
कलियुग	-	कलियुगी
कलम	-	कलमी
कलंक	-	कलंकित
कर्म	-	कर्मठ, कर्मी, कर्मण्य
कर्ज	-	कर्जदार, कर्जखोर
करूणा	-	कारूणिक, करूण
कमाई	-	कमाऊ
कपूर	-	कपूरी
कपट	-	कपटी
कथा	-	कथित
कथन	-	कथित
कत्ल	-	कातिल
कत्था	-	कत्थई
कण्ठ	-	कण्ठ्य

GET IT ON Google Play **Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"**